महिन्याचा विचार

Once Swamiji was at Val Morin (Canada) in the Sivananda Yoga Vedanta Centre founded by Swami Vishnudevananda. Due to a short circuit in the electricity cables, the quarters where Sri Swamiji was staying caught fire. By the time he noticed, it was already a huge blaze. He calmly came out of the quarters and knocked on the door of the hall where Swami Vishnu was holding a Yoga class. Swami Vishnu was surprised to see Swamiji standing there. Swamiji told him to do something about the fire. But Swami Vishnu found Swamiji in such a state of total poise that he could not at first believe and thought it to be a joke. The next moment, however, he knew it was true and took the necessary steps to put out the fire. Swamiji lost all his essential articles and many important records in the fire. People present there were, however, astonished to find that Swamiji did not show any signs of sorrow or worry during the entire episode. When he was later asked what his feelings really were at that time, he said that, in fact, he did feel sorry, but it was for a couple of friendly spiders who were his companions in the room and who must have perished in the blaze. The Sthitaprajna of Gita stood there unperturbed as calm as mid ocean with only a pure volition producing compassion in him for all creatures, big and small.

एक बार जब श्री स्वामी जी वाल मोरिन (कनाडा) में स्वामी विष्णुदेवानन्द द्वारा स्थापित शिवानन्द योग–वेदान्त केन्द्र में थे तब शॉर्ट सर्किट के कारण उनके कुटीर में आग लग गयी। उनके देखने से पूर्व ही उसने विशाल ज्वाला का रूप ले लिया था। वह शान्तिपूर्वक बाहर आये तथा उस हॉल के द्वार को खटखटाया जहाँ स्वामी विष्णु योग–प्रशिक्षण दे रहे थे। स्वामी जी को वहाँ खडे देख कर स्वामी विष्णू को आश्चर्य हुआ। स्वामी जी ने उनसे अग्नि बुझाने के लिए कुछ करने को कहा; किन्तु विष्णु स्वामी ने स्वामी जी को ऐसी साम्यावस्था में पाया कि प्रथम तो उन्हें विश्वास ही नहीं हुआ और उसे उन्होंने एक परिहास समझा। किन्तु दूसरे क्षण ही उन्हें पता चल गया कि वह सच है और उन्होंने आग बुझाने के लिए आवश्यक कदम उठाया। स्वामी जी का समा आवश्यक सामान तथा अनेक महत्त्वपूर्ण अभिलेख अग्नि में नष्ट हो गये। तथापि वहाँ पर उपस्थित लोग यह देख कर आश्चर्यचकित रह गये कि इस सम्पूर्ण घटना–काल में स्वामी जी में विषाद अथवा चिन्ता का कोई लक्षण प्रकट नहीं हुआ। बाद में जब उनसे प्रश्न किया गया कि उस समय उनका वास्तविक मनोभाव कैसा था तो उन्होंने कहा कि वास्त में उन्हें दु:ख का अनुभव हुआ, किन्तु वह दु:ख उन दो स्नेही मकडियों के लिए हुआ जो उस कमरे में उनकी साथी थीं और ज्वाला में नष्ट हो गयी होंगी। गीता–प्रतिपादित स्थितप्रज्ञ वहाँ अपने में छोटे तथा बडे सभी प्राणियों के लिए एकमात्र करूणाजनक शुद्ध संकल्प के साथ मध्यसागरवत् प्रशान्त, अनुद्विग्न खडे थे।

Commentary by Swami Sivananda on Bhagavad Gita

The Three qualities Viz Sattwa, Rajas and Tamas cannot affect a man who has knowledge of the self, for he has gone beyond them. He has become a Gunatita – One who has transcended the qualities of nature. The man who has no knowledge of the self and who is swayed by the force of ignorance or nescience is driven helplessly to action by the Gunas. One attains to the State of actionlessness by gaining knowledge of the self of a person simply sits quiet, abandoning action, you cannot say that he has attained the state of actionlessness. His mind will be planning, scheming and speculating. Thought is real action, The sage who is free from affirmative thoughts, wishes, likes & dislikes and who has knowledge of the self can be said to have attained the state of actionlessness.

विश्व – प्रार्थना

हे स्नेह और करूणा के आराध्य देव।

तुम्हें नमस्कार है, नमस्कार है।

तुम सच्चिदानन्दघन हो।

तुम सर्व व्यापक, सर्व शक्तिमान् और सर्वज्ञ हो।

तुम सबके अन्तर्वासी हो।

हमें उदारता, समदर्शिता और मन का समत्व प्रदान करो।

श्रद्धा, भक्ति और प्रज्ञा से कृतार्थ करो।

हमें आध्यात्मिक अन्त:शक्ति का वर दो, जिससे हम

वासनाओं का दमन कर मनोजय को प्राप्त हों।

हम अहंकार, काम, लोभ और द्वेष से रहित हों।

हमारा हृदय दिव्य गुणों से पूर्ण करो।

सब नाम-रूपों में तुम्हारा दर्शन करें।

तुम्हारी अर्चना के ही रूप में इन नाम-रूपों की सेवा करें।

सदा तुम्हारा ही स्मरण करें।

केवल तुम्हारा ही कलिकल्मषहारी नाम हमारे अधरपुटों पर हो।

सदा हम तुममें ही निवास करें ।

दिव्य जीवन संघ, पुणे शाखा वृत्तांत

* जानेवारी २०१७ महिन्याच्या सत्संग डॉ. राव यांचे घरी दि. २९ जानेवारी रोजी संपन्न झाला.
* ''दिव्य जीवन'' या मासिक पत्रिकेचा जानेवारी अंक परिवारातील सदस्यांना व बावची येथे 'संतपूजन' कार्यक्रमाच्या वेळी वाटण्यात आला.

पुणे शाखेचा पत्ता

श्री. गो. आ. नगरकर
'स्वानंद एस् २०,
सहजीवन सोसायटी,
पर्वती, पुणे ४११००९
मो. ९३७०५७०२०६

श्री.नितीन देशपांडे
'ईशावास्य'
प्लॉट नं. ४९/सायंतारा,
डी.एस.के. विश्व, धायरी,
पुणे ४११०४१
मो.नं. ९८५०९३१४१७
९८५०८२६९९०

बुक पोस्ट

प्रति

दिव्य जीवन

वर्ष १२/अंक २
फेब्रुवारी २०१७

दिव्य जीवन संघ, पुणे शाखा

यंदाचा 'संतपूजन' कार्यक्रम दि. २४/०१/२०१७ रोजी बावची येथे उत्साहात संपन्न झाला. प.पू. स्वामी ब्रह्मभूतानंदजी सरस्वती यावेळी उपस्थित होते. अमृतपान सोहोळ्यात प.पू. सद्गुरू स्वामी प्रणवानंदजी यांच्या पादुका स्थापना करण्यात आल्या. दुपारी प. पू. स्वामी ब्रह्मभूतानंदजी आणि स्वामी वासुदेवानंद सरस्वती यांचे प्रवचन झाले.

पसायदानाने या सत्संगाची सांगता झाली.